[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 3100** **G**

Unique Paper Code : 52051316

Name of the Paper : हिन्दी गद्य उद्भव और विकास (ख)

Name of the Course : **बी.कॉम. (प्रोग्राम)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अवतरणों के सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते फिर

लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ सोता है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है।

**अथवा**

मैं लुब्ध और मुग्ध होकर उनकी घनी-गहरी छायाएं देखता रहता हूँ... कयोंकि - - - क्योंकि मेरा यह पेड़, यह अच्छाई का पेड़ छाया प्रदान नहीं कर सकता, आश्रय प्रदान नहीं कर सकता, (क्योंकि वह जगह-जगह काटा गया है) वह तो कटी शाखाओं की दूरियों और अंतरालों में से केवल तीव्र और कष्टप्रद प्रकाश को ही मार्ग दे सकता है।

(ख) अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक् की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे, तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले। पर कौन सोचता है? सोचना तो क्या, उसे इतना भी पता नहीं चलता कि उसके भीतर नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है। उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है और यद्यपि पशुत्व के चिन्ह उसके भीतर रह गए हैं, पर वह पशुत्व को छोड़ चुका है। पशु बनकर वह आगे नहीं बढ़ सकता।

अथवा

इस अन्याय के विरुद्ध मुझे कुछ करना चाहिए; पर अचानक ही मेरे मानस-पट पर उदय हो आने वाले दो स्मृति-चित्र, शब्दों को कण्ठ से ओठों तक आने ही नहीं देते। उनकी रेखाएं समय ने फीकी कर दी हैं। पर उनमें भरा हुआ विषाद का रंग, न उससे धुल सका है, न धूमिल हो सकता है। कभी-कभी किसी दृश्य, चित्र या व्यक्ति को देखकर हमें उसका विरोधी दृश्य, चित्र या व्यक्ति स्मरण हो जाता है। मुझे भी इन हँसोड़, प्रसन्न और बात-बात पर उलझने वाले माँ-बेटों को देखकर बिबिया और उसकी माई याद आ जाती है।

2. हिंदी कहानी की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी उपन्यास के क्रमिक विकास पर विचार कीजिए।

3. "नमक का दारोगा" कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

"गुण्डा" कहानी के आधार पर नन्हकूसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. "ईमानदारी" निबंध के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है? (12)

**अथवा**

"नाखून क्यों बढ़ते हैं" निबंध के शीर्षक पर विचार कीजिए।

5. "बिबिया" के आधार पर बिबिया की संघर्षशील करुण कथा का विवेचन कीजिए। (12)

**अथवा**

"अंधेर नगरी" प्रहसन की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

6. निम्न में से किसी **एक** पर टिप्पणी कीजिए : (7)

(क) हिंदी संस्मरण

(ख) शुक्ल युगीन हिंदी निबंध

(ग) भारतेन्दुयुगीन नाटक